

# डॉ. डेव मैथ्यूसन, न्यू टेस्टामेंट लिटरेचर, व्याख्यान 27, इब्रानियों

© 2024 डेव मैथ्यूसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह न्यू टेस्टामेंट हिस्ट्री एंड लिटरेचर में डॉ. डेव मैथ्यूसन, इब्रानियों की पुस्तक पर व्याख्यान संख्या 27 है।

ठीक है, आरंभ करने से पहले केवल एक घोषणा, वास्तव में दो घोषणाएँ एक-दूसरे से संबंधित हैं।

उनमें से एक शुक्रवार है, एक परीक्षा है, आपकी तीसरी परीक्षा जो टाइम्स के माध्यम से जाने वाली जानकारी को कवर करती है। तो, मैं सोचता हूँ कि टाइम्स के माध्यम से इफिसियों। और आज हम इब्रानियों की किताब पर शुरुआत करेंगे, लेकिन यह तीसरी परीक्षा पर नहीं होगी।

तो, परीक्षा संख्या तीन शुक्रवार को आ रही है। इसका मतलब यह भी है, दूसरा, कि एक अतिरिक्त क्रेडिट समीक्षा सत्र है जो अभी ऐसा लग रहा है कि यह बुधवार की शाम होगी, गुरुवार की संभावना है, लेकिन बुधवार या गुरुवार को योजना बनाएं। और मैं आपको बता दूंगा, उम्मीद है, दिन के अंत तक, मैं सभी को ईमेल करूंगा और आपको बता दूंगा कि वह कब होगा, लेकिन एक और अतिरिक्त क्रेडिट समीक्षा सत्र।

तो वह बुधवार या गुरुवार है और फिर शुक्रवार को परीक्षा है। क्या मैंने किसी का हाथ ऊपर देखा? मुझे यकीन नहीं है। अरे हां। हाँ। अच्छा। ठीक है।

ठीक है। आइए प्रार्थना के साथ शुरुआत करें। पिता, आपने हमें जो खूबसूरत दिन फिर से दिया है, उसके लिए हम आपको धन्यवाद देते हैं।

हमारे प्रति आपकी वफ़ादारी, हमारे प्रति आपके प्यार और विशेष रूप से उस प्यार के लिए धन्यवाद जो आपने अपने जीवित शब्द, अपने बेटे, यीशु मसीह को भेजने में प्रदर्शित किया, लेकिन उस लिखित शब्द के लिए भी जो उसकी गवाही देता है और उसकी आज्ञाकारिता में जीने का क्या मतलब है यीशु मसीह और आपके लोग होने का क्या मतलब है। इसलिए, मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम अपने अध्ययनों के माध्यम से उस रहस्योद्घाटन को गंभीरता से लेंगे, आपके शब्दों को आपके द्वारा बनाई गई दुनिया को बेहतर ढंग से जानने की हमारी इच्छा, और ज्ञान के विभिन्न क्षेत्र जो आपने दयालुतापूर्वक हमें बताए हैं और हमें जानने की जिम्मेदारी दी है। यीशु के नाम पर, हम प्रार्थना करते हैं।

तथास्तु।

आज, हम वास्तव में नए नियम के अंतिम खंड में आगे बढ़ रहे हैं, हालांकि आप यह तर्क दे सकते हैं कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक, एक अर्थ में, अपने आप में एक अलग प्रकार की पुस्तक है। लेकिन हम नए नियम के एक खंड में आगे बढ़ते हैं जिसमें इब्रानियों और जेम्स और 1 और 2

और 3 जॉन और 1 और 2 पतरस शामिल हैं, जिन्हें आमतौर पर सामान्य पत्र या कैथोलिक पत्र कहा जाता है।

कैथोलिक या सामान्य से हमारा तात्पर्य केवल इतना है कि ये पत्र काफी व्यापक दर्शकों को संबोधित प्रतीत होते हैं। आप उसे सीखते हैं, खासकर जब आप जेम्स और 1 पीटर, उन पत्रों का परिचय पढ़ते हैं। लेखक पॉल के कुछ पत्रों से भिन्न है जहां पॉल विशिष्ट स्थानों में विशिष्ट चर्चों को संबोधित कर रहा है या जहां कुछ उदाहरणों में, वह विशिष्ट व्यक्तियों को संबोधित कर रहा है।

इनमें से कई पत्रों के साथ, इब्रानियों से लेकर यहूदा तक, रहस्योद्घाटन के अलावा सभी किताबें, आप उन्हें पढ़ते हैं और उनमें से कई, आपको यह एहसास होता है कि वे काफी व्यापक भौगोलिक क्षेत्र में रहने वाले ईसाइयों को संबोधित हैं। या कम से कम इब्रानियों के मामले में, स्वयं पत्र में या किसी विशिष्ट श्रोता के कार्य में कोई संकेत नहीं है, इसलिए, फिर से, इसे आमतौर पर इन सामान्य पत्रों में से एक का लेबल दिया गया है। इसलिए, हमने कई पुस्तकों को देखा है जिन्हें समूहों के रूप में माना जा सकता है, जैसे पॉल, जेल पत्रियां, क्योंकि उन्होंने जेल में रहते हुए इफिसियों, कुलुस्सियों, फिलेमोन और फिलिप्पियों को लिखा था।

हमने उन अनुभागों को देखा जिन्हें अक्सर देहाती पत्रियों का लेबल दिया जाता है, हालांकि यह संभवतः उनके लिए सबसे अच्छा लेबल नहीं है। लेकिन अब हम एक ऐसे खंड को देख रहे हैं जिसे अक्सर सामान्य या कैथोलिक पत्र कहा जाता है। और फिर, क्योंकि ऐसा प्रतीत होता है कि वे एक विशिष्ट स्थान के बजाय व्यापक रूप से बड़े भौगोलिक क्षेत्र में रहने वाले ईसाइयों को संबोधित कर रहे हैं, कम से कम उनमें से अधिकांश को।

इब्रानियों जैसी पुस्तक को छोड़कर, फिर भी, हम पूरी तरह से निश्चित नहीं हो सकते हैं कि यह एक बहुत ही विशिष्ट दर्शकों को संबोधित किया गया था या नहीं, हालांकि मुझे संदेह है कि यह था। लेकिन पत्र स्वयं हमें नहीं बताता। अब, इब्रानियों की पुस्तक में, इब्रानियों का अध्ययन करने वाले लोगों को परेशान करने वाले प्रश्नों में से एक यह पता लगाने की कोशिश करना है कि इसे किसने लिखा होगा।

क्योंकि इब्रानियों को एक पत्र कहकर, हम अक्सर इसे इब्रानियों को पत्र के रूप में संदर्भित करते हैं, और हम उस शीर्षक के बारे में भी थोड़ी बात करेंगे। लेकिन इसे पत्र कहने से, कुछ अर्थों में, इस कार्य को पढ़ने की हमारी उम्मीदें निराश हो जाती हैं क्योंकि यह एक पत्र से शुरू नहीं होती है। हमने पॉल के अन्य सभी पत्रों को देखा है, और कुछ पत्रों को हम देखेंगे, उनमें लेखक की पहचान होगी, यानी पॉल, यीशु मसीह का एक प्रेरित, और फिर यह संकेत होगा कि वह किसे लिख रहा है। कुलुस्से के संतों, या मेरे प्रिय भाई तीमुथियुस, या ऐसा ही कुछ।

इब्रानियों में इसका अभाव है। और इसलिए, यह पता लगाना समस्याग्रस्त हो जाता है कि, फिर, यह किसने लिखा होगा? आप लगभग उसी समस्या का सामना कर रहे हैं जिसका सामना आप गॉस्पेल में करते हैं, जिसमें मैथ्यू, मार्क, ल्यूक और जॉन लेखक का नाम नहीं लेते हैं, जो कथा के लिए सामान्य है। आप किसी कथा की शुरुआत यह बताकर नहीं करते कि इसे कौन लिख रहा है, कम से कम पहली शताब्दी में, इसलिए यह सामान्य है।

लेकिन यह काम थोड़ा अधिक कठिन है क्योंकि, हालांकि कभी-कभी यह एक पत्र की तरह लगता है, और हम अक्सर इसे एक पत्र कहते हैं, लेकिन इसका कोई संकेत नहीं है कि इसे किसने लिखा है। और हमारे पास इस बात का कोई सबूत नहीं है कि इसका कभी कोई परिचय था जो किसी तरह खो गया हो या छूट गया हो। इसके बजाय, इब्रानियों का आरंभ अध्याय 1 से होता है, और पद 1 से आरंभ होता है, बहुत समय पहले परमेश्वर ने हमारे पूर्वजों से भविष्यवक्ताओं के द्वारा अनेक और विभिन्न तरीकों से बात की थी, परन्तु इन अंतिम दिनों में उसने हमसे अपने पुत्र के द्वारा बात की है, जिसे उसने अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया है। सभी चीजें, जिनके माध्यम से उसने दुनिया बनाई।

और फिर वह इस बात का विस्तृत वर्णन करता है कि मसीह कौन है और उसके पाठकों के लिए इसका क्या अर्थ है, लेकिन लेखकत्व का कोई संकेत नहीं है। तो, चर्च, दिलचस्प बात यह है कि पूरे इतिहास में चर्च वास्तव में कई संभावित प्रस्ताव लेकर आया है। बहुत पहले यह सोचना आम था कि इब्रानियों को लिखे पत्र का लेखक पॉल था।

वास्तव में, बहुत पहले ही, दूसरी शताब्दी और उसके बाद के शुरुआती चर्च में इब्रानियों की लोकप्रियता बढ़ने का एक कारण यह था कि बहुत से लोग सोचते थे कि पॉल इसका लेखक था। फिर भी, मुझे लगता है कि आज आम सहमति यह है कि शायद पॉल ने इसे नहीं लिखा है। लेकिन फिर भी हम पूरी तरह से आश्चस्त नहीं हो सकते हैं, इसलिए कुछ लोगों ने सुझाव दिया है, ठीक है, अपोलोस ने इसे लिखा होगा, या बरनबास ने भी, पहली शताब्दी में दो प्रसिद्ध ईसाई नेताओं ने, जिन्होंने इब्रानियों की पुस्तक को बहुत अच्छी तरह से लिखा होगा, ल्यूक।, वास्तव में एक मोनोग्राफ है, एक किताब जो अभी हाल ही में तैयार की गई थी, जिसमें तर्क दिया गया था कि ल्यूक के सुसमाचार और इब्रानियों को लिखे पत्र के बीच मौखिक और अन्यथा कई समानताएं हैं।

कुछ लोग सोचते हैं कि ल्यूक ने इसे लिखा है। दूसरों ने अन्य संभावनाएँ सूचीबद्ध की हैं। यहां तक कि यीशु की मां मरियम को भी इस बात पर वोट मिलता है कि इब्रानियों की पुस्तक का लेखक कौन था।

संभवतः हम ओरिजन से बेहतर कुछ नहीं कर सकते, जिन्होंने कहा था, केवल ईश्वर ही जानता है कि इब्रानियों की पुस्तक किसने लिखी। इसलिए, हम इस बारे में बहुत अच्छी तरह से अनुमान लगा सकते हैं कि लेखक कौन रहा होगा, जहां तक निहित लेखक खुद को पाठ में प्रकट करता है, जहां तक लेखक ने क्या सोचा होगा, शायद उसकी पृष्ठभूमि और उसके स्रोतों के बारे में कुछ सोच रहा था और वह क्या हासिल करने की कोशिश कर रहा था, आदि। लेकिन उस पर एक सटीक नाम और लेखक पर एक सटीक पहचान डालने की कोशिश करने के लिए, अगर कोई सोचता है कि मैरी, यीशु की मां, एक उम्मीदवार थी, तो, हालांकि वह कोई वास्तव में पकड़ में नहीं आया है, लेकिन हमें शायद, फिर से, ओरिजन के निष्कर्ष के लिए समझौता करना होगा, भगवान ही जानता है कि इब्रानियों को पत्र किसने लिखा है, क्योंकि हमारे पास पर्याप्त जानकारी नहीं है और लेखक खुद की पहचान नहीं करता है या पत्र में स्वयं.

अब, इब्रानियों को क्यों लिखा गया था? फिर, दूसरी कठिनाई यह है कि इब्रानियों ने पाठकों की पहचान नहीं की है कि वास्तव में वे कौन हैं और वे कहाँ हैं, जैसे कि पॉल अपने पाठकों की पहचान करता है। फिर, यह थोड़ा मुश्किल हो जाता है, हालांकि, दिलचस्प बात यह है कि कुछ प्रारंभिक चर्च परंपरा रोम शहर में इब्रानियों की पहचान करती है या उनका पता लगाती है। तो, कुछ लोगों ने सुझाव दिया है कि इब्रानियों ने व्यक्तियों को संबोधित किया होगा, और हम इस बारे में बात करेंगे कि यह विशेष रूप से कौन हो सकता है, लेकिन हो सकता है कि वह रोम में रहने वाले समूह को संबोधित कर रहा हो।

यह एक संभावना है, लेकिन फिर भी, हमें पाठक कौन हैं, इसके बारे में हम जो कुछ भी जान सकते हैं, उसे बताने के लिए हमें इब्रानियों पर ही निर्भर रहना होगा। अब, इस पहले बिंदु पर, इब्रानियों पर वापस आते हैं। पुनः, आपकी अधिकांश बाइबलों में इब्रानियों के लिए पत्र जैसा कुछ होगा, या केवल इब्रानियों के लिए, या ऐसा ही कुछ होगा।

एक बार फिर, वह मौलिक नहीं है। जब लेखक, चाहे वह कोई भी हो, बैठा और इब्रानियों की पुस्तक लिखी, तो उसने शीर्ष पंक्ति पर इब्रानियों को लिखकर और फिर अपना पत्र शुरू करके शुरुआत नहीं की। यह एक लेबल है जिसे बाद के चर्च द्वारा जोड़ा गया है, और कुछ लोगों ने इस पर बहस की है कि यह सटीक है या नहीं।

इसका अभिप्राय इब्रानियों के पत्र को पढ़ने से प्रतीत होने वाली सामग्री और प्राथमिक श्रोताओं को पकड़ने का प्रयास करना है। तो फिर, हम पाठक कौन हो सकते हैं, यह जानने के लिए पूरी तरह से इब्रानियों की पुस्तक पर निर्भर हैं। लेकिन इब्रानियों की उपाधि का कारण कुछ बातों से उत्पन्न होता है।

नंबर एक यह है कि इब्रानियों का लेखक, चाहे वह कोई भी हो, यह मानता है कि उसके पाठक पुराने नियम और पुराने नियम की बलि प्रणाली से बहुत परिचित हैं। जिसके कारण, आप देख सकते हैं कि क्यों कोई इस पुस्तक को इब्रानियों का नाम देगा। उनका मानना है कि प्राथमिक पाठक यहूदी हैं, और जब आप किताब पढ़ते हैं तो आप इसे देख सकते हैं।

फिर, यह लगभग वैसा ही है जैसे लेखक का पूरा तर्क, फिर से, यहूदी बलिदान प्रणाली के पुराने नियम के ज्ञान और यहां तक कि यहूदी तम्बू और मंदिर की पूजा का ज्ञान मानता है। और फिर धारणा यह है, या अगला सवाल यह है कि, सबसे अधिक संभावना है कि कौन से पाठक इससे परिचित होंगे? क्या लेखक उस प्रकार का ज्ञान ग्रहण कर सकता है? और कुछ लोग सुझाव देंगे कि यह पुराना नियम होना चाहिए या पुराने नियम में डूबे हुए लोग, यानी यहूदी पाठक वर्ग होना चाहिए। दरअसल, मैं यह मानकर चल रहा हूँ कि इब्रानियों के पाठक संभवतः यहूदी हैं।

अब, हमें आगे बढ़ना होगा, और हमें थोड़ा और विशिष्ट होने की आवश्यकता है। क्या वे गैर-ईसाई यहूदी हैं? क्या वे किसी प्रकार के झूठे शिक्षक हैं? क्या यही समस्या है? क्या वे ईसाई यहूदी, यहूदी हैं जो ईसाई धर्म में परिवर्तित हो गए हैं? आखिर ये पाठक कौन हैं? इब्रानियों 2, या इब्रानियों के समग्र उद्देश्य के बारे में सोचते समय, प्रमुख में से एक यह है कि यीशु को जिस प्राथमिक तरीके से चित्रित किया गया है, और यह वास्तव में आपके पाठ्यपुस्तक पढ़ने से आज

आपके प्रश्नोत्तरी में प्रश्नों में से एक था, इब्रानियों की पुस्तक में यीशु को जिस प्राथमिक तरीके से चित्रित किया गया है वह पुराने नियम की पूर्ति में महायाजक के रूप में है। और पाठक, लेखक, भजन 110 पर बहुत अधिक निर्भर है।

वास्तव में, मैं यह तर्क दूँगा कि इब्रानियों की संपूर्ण पुस्तक के पीछे भजन 110 निहित है। यह भजन 110 में है, दिलचस्प बात यह है कि भजन 110 का लेखक एक मसीहा राजा और एक उच्च पुजारी दोनों के विचारों को जोड़ता है। सुनिए क्या... हम वास्तव में इसे पहले भी पढ़ चुके हैं।

हमने यह पाठ पहले भी देखा है। इफिसियों में ब्रह्मांड के लौकिक भगवान के रूप में यीशु को पॉल की समझ में अन्य भजनों के साथ-साथ भजन 110 ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। लेकिन भजन 110, इसे सुनें, पहले कुछ छंद।

यहोवा ने मेरे प्रभु से कहा, मेरे दाहिने हाथ बैठ, जब तक मैं तेरे शत्रुओं को तेरे चरणोंकी चौकी न कर दूँ। यहोवा सिथ्योन से तेरे पराक्रमी राजदण्ड, अर्थात् राजा के पराक्रमी राजदण्ड को भेजता है। अपने शत्रुओं के बीच में शासन करो।

जिस दिन तू अपनी सेनाओं को पवित्र पर्वतों पर ले जाएगा, उस दिन तेरी प्रजा स्वेच्छा से अपने आप को बलिदान कर देगी। भोर के गर्भ से ओस की नाई तेरी जवानी तेरे पास आएगी। प्रभु ने शपथ खाई है और वह अपना मन नहीं बदलेंगे।

आप, इस राजा का जिक्र करते हुए, मलिकिसिदक के आदेश के अनुसार हमेशा के लिए एक पुजारी हैं। प्रभु आपके दाहिने हाथ पर है। तो, दिलचस्प बात यह है कि, भजन 110 एक ऐसे व्यक्ति की कल्पना और चित्रण करता है जो एक मसीहा व्यक्ति और एक शाही व्यक्ति दोनों है, लेकिन जो अब एक राजा भी है, लेकिन उस तरह से नहीं जैसा कि कोई मान सकता है।

और हम उस पर वापस जाएंगे। मैं उस प्रश्न पर वापस लौटना चाहता हूँ। या एक पुजारी, मुझे क्षमा करें, राजा नहीं।

यह राजसी व्यक्ति एक पुजारी भी है, लेकिन उस तरह से नहीं जैसा कि कोई उम्मीद करता है। और हम इसके बारे में और बात करेंगे। तो, मेरा निष्कर्ष यह है कि मैं इब्रानियों के पाठकों को सुझाव दूँगा कि, पुराने नियम की सभी पृष्ठभूमि और स्पष्ट धारणा को देखते हुए कि वे पुराने नियम और बलि प्रणाली की कुछ जटिलताओं से बहुत परिचित होंगे, मैं इसे स्वीकार करता हूँ लेखक के प्राथमिक श्रोता यहूदी हैं।

और मैं इसे बाद में थोड़ा और विस्तार से साबित करना चाहता हूँ, लेकिन मैं शायद आपके नोट्स में जो उद्धरण पाया गया है उससे बेहतर कुछ नहीं कर सकता। यह एफएफ ब्रूस का एक उद्धरण है। और इब्रानियों पर अपनी टिप्पणी में, उन्होंने पाठकों को इस प्रकार सारांशित किया।

उनका कहना है कि इब्रानियों के संबोधनकर्ता यहूदी ईसाइयों का एक समूह प्रतीत होते हैं, जिन्होंने व्यक्तिगत रूप से यीशु को कभी नहीं देखा या सुना था। दूसरे शब्दों में, वे दूसरी पीढ़ी के ईसाई हैं। ये प्रेरितों और उन लोगों के समान नहीं हैं जो यीशु के प्रत्यक्षदर्शी थे।

लेकिन उन्होंने कभी भी यीशु को व्यक्तिगत रूप से नहीं सुना या देखा है, लेकिन उन्होंने उनके बारे में कुछ लोगों से सीखा है जिन्होंने स्वयं यीशु को सुना था और उनकी बात सुनी थी। उनके धर्म परिवर्तन के बाद से, उन्हें उत्पीड़न का सामना करना पड़ा, लेकिन हालांकि उन्हें सार्वजनिक दुर्व्यवहार, कारावास और अपनी संपत्ति की लूट का सामना करना पड़ा, फिर भी उन्हें अपने विश्वास के लिए मरने के लिए नहीं बुलाया गया था। उन्होंने अन्य साथी ईसाइयों की सेवा करके अपने विश्वास का व्यावहारिक प्रमाण दिया था, विशेषकर अपने में से उन लोगों की देखभाल करके, जिन्होंने उत्पीड़न के समय सबसे अधिक पीड़ा झेली थी, फिर भी उनके ईसाई विकास को रोक दिया गया था, या एक तरह से रोक दिया गया था और धीमा कर दिया गया था।

आगे बढ़ने के बजाय, वे अपनी आध्यात्मिक प्रगति में पूर्ण विराम लगाने के इच्छुक थे। यदि नहीं, तो वास्तव में, उस चरण पर वापस जाएँ जहाँ वे चले गए थे। संभवतः, वे उस धर्म से अपने संबंध तोड़ने के लिए अनिच्छुक थे जिसे रोमन कानून, यानी यहूदी धर्म के तहत सुरक्षा प्राप्त थी, और ईसाई तरीके के प्रति अपरिवर्तनीय प्रतिबद्धता के जोखिमों का सामना करना पड़ा।

लेखक जो उन्हें जानता है या उनके बारे में काफी समय से जानता है और उनके कल्याण के लिए देहाती चिंता महसूस करता है, उन्हें पीछे हटने के खिलाफ चेतावनी देता है, क्योंकि इसके परिणामस्वरूप उनका ईसाई धर्म पूरी तरह से गिर सकता है। वह उन्हें इस आश्वासन के साथ प्रोत्साहित करता है कि यदि वे पीछे हटते हैं तो उनके पास खोने के लिए सब कुछ है, लेकिन यदि वे आगे बढ़ते हैं तो उनके पास पाने के लिए भी सब कुछ है। और मुझे लगता है कि यह आखिरी पंक्ति है, जो इब्रानियों के मुख्य संदेश को सराहनीय रूप से सारांशित करती है, कि लेखक अपने पाठकों को यह समझाने की कोशिश कर रहा है कि यदि वे मसीह को अपनाते हैं तो उनके पास हासिल करने के लिए सब कुछ है, लेकिन अगर वे उससे मुंह मोड़ लेते हैं तो उनके पास खोने के लिए भी सब कुछ है। .

यह लगभग वैसा ही है जैसे कि वे या तो आगे बढ़ने और पूरी तरह से विश्वास के साथ ईसा मसीह को अपनाने के संक्रमण चरण में हैं, या अपने पैतृक धर्म की ओर वापस लौट रहे हैं, यानी यहूदी धर्म की ओर वापस लौट रहे हैं। हम बस एक क्षण में उस पर लौटेंगे। मैं फिर से यह प्रश्न उठाना चाहता हूँ कि अधिक विशिष्ट रूप से पाठक कौन हैं? लेकिन, फिर से, मुझे ऐसा लगता है कि लेखक का उद्देश्य इन पाठकों को, चाहे वे विशेष रूप से कोई भी हों, संभवतः यहूदी और यहूदी पृष्ठभूमि से हों, यह विश्वास दिलाने की कोशिश करना है कि पाठकों को यह विश्वास दिलाना है कि यदि वे बदल जाते हैं तो उनके पास खोने के लिए सब कुछ है। उनकी पीठ मसीह की ओर है, परन्तु उनके पास पाने के लिए सब कुछ है।

ऐसा करने में उन्हें चाहे जो भी कष्ट सहना पड़े और अनुभव करना पड़े, उनके पास हासिल करने के लिए सब कुछ है अगर वे आगे बढ़ेंगे और ईमानदारी से मसीह को गले लगाएंगे। अब, जैसा कि मैंने कहा, इब्रानियों के साथ कठिनाइयों में से एक यह है कि यह कैसे वर्गीकृत किया जाए कि यह किस प्रकार का साहित्य है, क्योंकि कुछ मामलों में जब आप इसे पढ़ते हैं, तो यह आपको एक पत्र या पत्र पढ़ने की याद दिलाता है, क्योंकि इसमें धार्मिक तर्क हैं जैसा कि आप पाते हैं पॉल के पत्रों में, लेकिन फिर इसमें उपदेश सामग्री और आदेश भी हैं, और हम देखेंगे कि इब्रानियों को

कड़ी चेतावनियों की एक श्रृंखला के लिए जाना जाता है जो लेखक अपने पाठकों को जारी करता है, और हम यह सब डालने का प्रयास करने जा रहे हैं एक साथ। लेकिन हिब्रू किस प्रकार की पुस्तक है इसका निकटतम सुराग हमें अध्याय 13 और श्लोक 22 में मिलता है, जहां लेखक कहता है कि वह उपदेश का एक शब्द लिख रहा है।

दूसरे शब्दों में, मुझे लगता है कि इसे वर्गीकृत करने का एक सबसे अच्छा तरीका यह है कि यह लिखित रूप में एक पत्र की तरह भेजा गया उपदेश है। दूसरे शब्दों में, इसमें उपदेश या धर्मोपदेश के सभी लक्षण हैं, लेकिन अब लिखित रूप में। और यह वास्तव में एक पत्र की तरह समाप्त होता है और संभवतः भेज दिया जाता है।

यह वैसा ही होगा जैसे कोई व्यक्ति एक उपदेश लिखता है और फिर एक पत्र को अंत में संलग्न करता है और उसे उसी तरह भेजता है। तो शायद हमें इब्रानियों के बारे में इसी तरह सोचना चाहिए, और शायद यही कारण है कि यह एक पत्र की तरह शुरू नहीं होता है और इसमें अन्य सभी चीजें नहीं हैं जो आप पॉल के पत्रों में खोजने की उम्मीद कर सकते हैं। यह एक उपदेश की तरह है, कुछ ऐसा जो कोई उपदेश देगा, लेकिन लिखने के लिए प्रतिबद्ध है, लिखित रूप में रखा जाता है और ऐसे भेजा जाता है जैसे कोई पत्र भेजता है।

और हम देखेंगे कि यह लेखक के उद्देश्य के लिए बिल्कुल उपयुक्त है। अब फिर, अधिक विशेष रूप से, इब्रानियों के पाठक कौन थे? मैंने आपको सुझाव दिया कि संभवतः वे यहूदी पृष्ठभूमि से हैं। और मुझे इसे थोड़ा और भरने दीजिए।

मुझे लगता है कि ये क्या हो रहा है। सबसे अधिक संभावना यह है कि इब्रानियों के पाठक यहूदी पृष्ठभूमि से आये थे। वे पुराने नियम के तहत पूजा करते थे और यहूदी धर्म के किसी रूप से संबंधित थे, जैसे कि हमने फरीसियों, सद्दुकीयों और एस्सेन्स के साथ पीछे देखा, कि वे यहूदी धर्म के किसी रूप से संबंधित थे।

और उन्होंने सुसमाचार का प्रचार सुना था और उस पर प्रतिक्रिया व्यक्त की थी, और अब, मिलना-जुलना शुरू कर दिया था, शायद उन्होंने अभी तक यहूदी आराधनालय से पूरी तरह नाता नहीं तोड़ा था, लेकिन इस नव स्थापित चर्च और इस नए से मिलना शुरू कर रहे थे - उलझा हुआ धर्म जिसे हम ईसाई धर्म कहते हैं। और अब, बहुत सारी चीजें घटित हो रही थीं। इनमें से कई व्यक्ति, जो यहूदी धर्म से ईसाई धर्म में परिवर्तित हो गए थे, अब कुछ संघर्षों का अनुभव कर रहे थे जो इसके साथ चले थे।

और उनमें से एक, मुझे आश्चर्य है, मुझे लगता है कि उनमें से एक यह था कि यहूदी धर्म छोड़ने और अब जाहिर तौर पर ईसाई धर्म नामक इस नए धर्म में परिवर्तित होने के कारण उनके अपने परिवार के सदस्यों द्वारा उन्हें बहिष्कृत किया जा रहा था और उनके साथ बहुत खराब व्यवहार किया जा रहा था। जैसा कि एफएफ ब्रूस के उद्धरण में पढ़ा गया है, एक ऐसा धर्म जिसे रोमन शासन के तहत अधिकांश समय संरक्षण का आनंद नहीं मिला, जैसा कि यहूदी धर्म के लिए सच था। तो, आपके पास उन लोगों का समूह है जो यहूदी धर्म के तहत पले-बढ़े और जीवन जीते थे, अब उन्होंने इस नए धर्म के बारे में और इस व्यक्ति, यीशु मसीह के बारे में सुना है, उन्होंने उन्हें

प्रचारित सुसमाचार सुना है, और अब उन्होंने प्रतिक्रिया दी है किसी तरह से और इस चर्च से जुड़ना शुरू कर दिया, लेकिन अब शायद उन्हें छोड़ने के लिए अपने दोस्तों और परिवार और आराधनालय से भी उत्पीड़न और बहिष्कार और समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।

इसके अलावा, एक अन्य कारक यह हो सकता है कि उन्होंने एक ऐसा धर्म छोड़ दिया है जो वास्तव में कुछ अर्थों में शारीरिक रूप से इंद्रियों को आकर्षित करता है। उन्होंने एक ऐसा धर्म छोड़ दिया है जो न केवल आराधनालय में मिलता था बल्कि बलिदानों पर केंद्रित था और दावतों और त्योहारों और फसह के भोजन आदि पर केंद्रित था, और अब वे उस यीशु की पूजा करने के लिए उसे छोड़ रहे थे जिसे उन्होंने कभी नहीं देखा था, जो था अदृश्य, और उन्हें एक मंदिर में पूजा करनी थी जो अब एक स्वर्गीय मंदिर है।

तो शायद यहूदी धर्म में कुछ आकर्षण था क्योंकि यह मूर्त और भौतिक था, कुछ ऐसा जिसे वे छू सकते थे, महसूस कर सकते थे और वास्तव में देख सकते थे। उस ईसाई धर्म के बदले में जो एक ऐसे यीशु की पूजा करने के इर्द-गिर्द घूमता था जो अदृश्य था, या कम से कम दिखाई नहीं देता था लेकिन स्वर्ग में था और एक मंदिर भी था जो स्वर्गीय था। और इसलिए यह उन्हें यहूदी धर्म में वापस जाने की इच्छा का एक कारण प्रदान कर सकता है।

तो, फिर से, संक्षेप में कहें तो, यहूदी परिवार और दोस्तों से उन्हें कुछ उत्पीड़न और बहिष्कार का सामना करना पड़ा होगा क्योंकि उन्होंने अब इस नए धर्म का जवाब दिया था, और शायद उस धर्म में वापस जाने की लालसा के कारण जो मूर्त था और दृश्य और भौतिक, कई पाठक, ये यहूदी ईसाई, अब पीछे मुड़कर अपने धर्म में वापस जाने के लिए प्रलोभित थे। और फिर लेखक उन्हें ऐसा करने के खतरे के बारे में समझाने के लिए लिखने और हर संभव प्रयास करने जा रहा है। अब, मेरी राय में, आप पूछ सकते हैं, क्या ये पाठक वास्तव में ईसाई थे या नहीं? मेरी राय में, लेखक, मुझे लगता है कि लेखक को संदेह है कि उसके अधिकांश पाठकों ने अभी तक मसीह को पूरी तरह से नहीं अपनाया है।

उन्होंने अभी तक यहूदी धर्म से ईसाई धर्म में पूर्ण परिवर्तन नहीं किया था और उन्होंने अभी तक यीशु मसीह को पूरी तरह से स्वीकार नहीं किया था। मुझे आश्चर्य है कि क्या उसने सोचा कि वे उस निर्णायक बिंदु पर थे जहां वे किसी भी दिशा में जा सकते थे। और अब ऐसा प्रतीत होता है कि उनके पीछे हटने और यहूदी धर्म में वापस जाने का खतरा है।

लेखक फिर उन्हें चेतावनी देने के लिए लिखता है, यदि आपके पास खोने के लिए सब कुछ है, यदि आप पीछे मुड़ते हैं और आप यीशु मसीह से मुंह मोड़ लेते हैं, इतनी दूर आने के बाद और सुसमाचार सुनने के बाद और अब चर्च से भी जुड़े हुए हैं, तो इसे अस्वीकार करें और चले जाएं अपने पूर्व धर्म में वापस आ जाओ. यदि आप ऐसा करते हैं तो आपके पास खोने के लिए सब कुछ है और इसके बजाय यदि आप प्रयास करते हैं और आगे बढ़ते हैं और यीशु मसीह को ईमानदारी से गले लगाते हैं तो आपके पास पाने के लिए भी सब कुछ है। तो, मैं उस धारणा से काम करने जा रहा हूं।

ये वे यहूदी हैं जिन्होंने यीशु मसीह और इस सुसमाचार को आस्था में अपनाने और इस चर्च का हिस्सा बनने के लिए ईसाई धर्म में परिवर्तन कर लिया है या संक्रमण में हैं, फिर भी पाठक को संदेह है कि उन्होंने शायद अभी तक पूरी तरह से ऐसा नहीं किया है और उन्हें उस अतिरिक्त की आवश्यकता है धक्का दें ताकि वे पीछे न मुड़ें और उनके संपर्क में आने वाली हर चीज़ की उपेक्षा और अस्वीकार न करें। ठीक है, इब्रानियों को देखने के दो तरीके हैं जहां तक हम सोचते हैं कि यह कैसे टूटता है, इसकी रूपरेखा कैसे बनती है, और इब्रानियों की मुख्य योजना क्या है। इसे विभाजित करने के दो तरीके हैं।

उनमें से एक अधिक संरचनात्मक है. अर्थात्, जब आप इब्रानियों को पढ़ते हैं, तो एक चीज़ जो आपके ध्यान में आती है वह यह है कि लेखक किस प्रकार व्याख्या और उपदेश के बीच आगे-पीछे होता है। यह लगभग पॉल की सांकेतिक अनिवार्यता के समान होगा।

जबकि आमतौर पर पॉल अपने पत्र का लगभग आधा भाग संकेतात्मक को समर्पित करता है और फिर वह अंत में अनिवार्यता तक पहुँचता है, इब्रानियों का लेखक आगे-पीछे बदलता रहता है। प्रदर्शनी भाग आम तौर पर एक खंड होता है जहां लेखक दर्शाता है कि यीशु मसीह पुराने नियम की किसी चीज़ से श्रेष्ठ हैं। फिर पाठकों के लिए उपदेश है कि वे इसे समझने में असफल न हों और यीशु मसीह के प्रति आज्ञाकारिता और विश्वास में आगे बढ़ते रहें।

तो फिर, सभी प्रदर्शनी खंडों में, लेखक यीशु मसीह की तुलना पुराने नियम की किसी चीज़ से करता है। यीशु की तुलना स्वर्गदूतों से की जाती है, उनकी तुलना मूसा से की जाती है, उनकी तुलना यहोशू से की जाती है, उनकी तुलना बाकी लोगों से की जाती है जिनका लोगों ने भूमि में प्रवेश करते समय आनंद लिया था, उनकी तुलना तम्बू और मंदिर से की जाती है, उनकी तुलना बलिदानों, पशु बलि से की जाती है, उसकी तुलना पुरानी वाचा से की जाती है। पुराने नियम की सभी प्रमुख विशेषताओं की तुलना इन प्रदर्शनी खंडों में यीशु से की गई है ताकि यह दिखाया जा सके कि यीशु श्रेष्ठ हैं।

एक बार जब लेखक यह प्रदर्शित कर देता है, तो वह यह कहने के लिए उपदेश देने लगेगा, यदि यह सच है, तो बेहतर होगा कि आप यही करें। वापस मत जाओ. आप अपने पैतृक धर्म, यहूदी धर्म, में वापस क्यों जाना चाहेंगे, जबकि कोई बहुत श्रेष्ठ चीज़ आपके सामने है? आप वापस क्यों जाना चाहेंगे? यदि आप पीछे जाते हैं तो आपके पास खोने के लिए सब कुछ है, और यदि आप आगे बढ़ते हैं और श्रेष्ठ मसीह को गले लगाते हैं, तो आपके पास पाने के लिए सब कुछ है, यह ईश्वर का श्रेष्ठ रहस्योद्घाटन है।

वास्तव में, अध्याय 1 और 2 में मैंने जो छंद पढ़े हैं, अतीत में, भगवान ने भविष्यवक्ताओं से विभिन्न तरीकों से बात की थी, लेकिन अंतिम दिनों में, उन्होंने अपने पुत्र के माध्यम से बात की है। और यदि लेखक अपने पाठक से यह कहलवाने का प्रयास कर रहा है, तो उसे न चूकें। अपने पुत्र, यीशु मसीह में परमेश्वर के अंतिम रहस्योद्घाटन को अनसुना न करें।

इसलिए, वह जोश के साथ उन्हें फिर से अपने पास लाने की कोशिश करता है, यदि आप उन्हें लगभग एक झूले पर, टेढ़े-मेढ़े रूप में देख सकते हैं, और यह किसी भी दिशा में जा सकता है, तो

वह उन्हें टिप देना चाहता है ताकि वे मसीह को पूरी तरह से गले लगा सकें, यहूदी धर्म के तहत अपने जीवन में वापस जाने के लिए दूसरे रास्ते पर जाने के बजाय। पत्र को विभाजित करने और उसे देखने का दूसरा तरीका तीन गुना है। आप इसे अपने नोट्स में पृष्ठ 50 के शीर्ष पर देखेंगे।

पहले चार अध्याय यीशु को ईश्वर के सच्चे रहस्योद्घाटन, ईश्वर के सच्चे दूत के रूप में चित्रित करते हैं। फिर, यीशु ईश्वर का अंतिम प्रकाशन है। यीशु परमेश्वर की अंतिम वाणी है।

इसलिए, बेहतर होगा कि वे उसकी बात सुनें। दूसरा खंड हमारे महायाजक के रूप में यीशु के बारे में है। इस बड़े भाग में यीशु को श्रेष्ठ महायाजक के रूप में चित्रित किया गया है।

इसलिए फिर से, बेहतर होगा कि वे उसकी बात सुनें और उसे विश्वास के साथ गले लगा लें। और फिर अंत में, यीशु के साथ हमारी साझेदारी, इस यीशु की आज्ञाकारिता में चलने का क्या मतलब है जो भगवान के अंतिम दूत हैं और जो हमारे महायाजक हैं। अब, आप उस रूपरेखा पर ध्यान देंगे जो मैंने आपको दी है, यदि कोई है, यदि आप में से वे, वे तेज-तर्रार छात्र हैं, तो आप देखेंगे कि अध्याय और पद्य संदर्भ एक-दूसरे का अनुसरण नहीं करते हैं रूपरेखा।

ऐसा इसलिए है क्योंकि इब्रानियों को रेखांकित करना वास्तव में काफी कठिन है क्योंकि कभी-कभी अनुभाग एक संक्रमण के रूप में कार्य करते हैं, जैसे कि जो पहले आता है उसका निष्कर्ष, लेकिन साथ ही साथ जो आगे आता है उसका परिचय भी देते हैं। इसलिए, यदि आप इस त्रिस्तरीय विभाजन पर अध्याय और छंदों को ध्यान से देखें, तो वे बिल्कुल मेल नहीं खाते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि इनमें से कुछ अनुभाग अगले अनुभाग के निष्कर्ष और परिचय दोनों के रूप में कार्य करते हैं।

अब, इब्रानियों में लेखक जो कुछ करता है उसका एक भाग पाठकों को समझाना है। पुनः, यदि वह उन्हें पुरानी वाचा और उनके यहूदी धर्म में वापस न जाने के लिए मनाना चाहता है, तो उसे उन्हें यह समझाने की आवश्यकता है कि उनके पास बदलने के लिए कहीं अधिक श्रेष्ठ कुछ है, और वह है यीशु मसीह और नई वाचा का उद्धार जो वह लाता है . हालाँकि, कभी-कभी, जब कोई इब्रानियों की पुस्तक पढ़ता है, तो यह देखना या सोचना आसान होगा कि लेखक पुराने नियम के बारे में अपमानजनक है।

मेरा मतलब है, जब वह यीशु के श्रेष्ठ होने की बात करता है और हमारे पास एक श्रेष्ठ पुजारी और एक श्रेष्ठ वाचा है, और वह कहता है कि पुराने नियम के बलिदान कभी भी बचा नहीं सकते, वे कभी भी पूर्णता नहीं ला सकते, लेकिन यीशु और नई वाचा ऐसा करते हैं . लेखक ऐसी बातें कहता है जो आपको लगभग यह सोचने पर मजबूर कर सकती हैं कि वह लगभग यहूदी विरोधी या पुराने नियम का विरोधी था और उसने नए नियम को कुछ श्रेष्ठ और पुराने नियम और पुराने नियम को कुछ घटिया के रूप में देखा, जिसके बिना उसके पाठक काम कर सकते थे। उन्हें अब इसकी बिल्कुल भी आवश्यकता नहीं है। तो, सवाल यह है कि फिर लेखक को पुरानी वाचा में क्या गलत लगता है? पुरानी वाचा से मेरा तात्पर्य केवल उस व्यवस्था या वाचा से है जो परमेश्वर ने मूसा के अधीन इस्राएल के साथ बनाई थी।

इज़राइल का जीवन और कानून के प्रति उनकी आज्ञाकारिता सभी पुरानी वाचा द्वारा विनियमित थे। लेकिन जैसा कि हमने देखा, पुराने नियम का अनुमान है कि एक दिन एक नई वाचा होगी, भगवान का अपने लोगों को आशीर्वाद देने का एक नया तरीका, अपने लोगों से संबंधित भगवान का एक नया तरीका जो पुरानी वाचा और पर निर्भर नहीं करता है कानून। लेकिन पुरानी वाचा में क्या गलत है? लेखक क्यों आश्चर्य है कि पाठकों को पुरानी वाचा की ओर वापस नहीं जाना चाहिए? उसे इसमें क्या गलत लगता है? नई वाचा इतनी श्रेष्ठ क्यों है? वह क्या सोचता है कि पुरानी वाचा में क्या गलत है, यदि कुछ भी गलत है? सबसे पहले हमें गलतफहमी से बचना होगा।

और वह यह है कि, मैं इसे वैसे ही लेता हूँ जैसे मैं इब्रानियों को पढ़ता हूँ, मैं यह मानता हूँ कि लेखक यह नहीं कह रहा है कि पुरानी वाचा ही दोषपूर्ण थी या कि भगवान ने गड़बड़ कर दी और पुरानी वाचा दे दी जो उसे नहीं मिलनी चाहिए थी और यह काम नहीं करती थी, तो अब उसे प्लान बी में जाना था, जो एक नई वाचा है, या कि पुरानी वाचा का मतलब बुरा या बुरा है, इसका मतलब बुराई है, और नई वाचा का मतलब है कि सब कुछ ठीक और अच्छा है। निःसंदेह, ऐसी बात नहीं है। इसके बजाय, मैं आपको सुझाव दूंगा कि इब्रानियों के लेखक के अनुसार, पुरानी वाचा की प्राथमिक कमी यह है कि यह कभी भी पाप की समस्या से उस तरह से पूरी तरह से नहीं निपट सकता है जो उपासक को अनुमति देता है, इसने भगवान के लोगों को प्रवेश करने की अनुमति दी है। भगवान की उपस्थिति।

तो, पुरानी वाचा के साथ समस्या यह है कि लेखक आश्चर्य है कि यह नहीं कर सकता, यह अंततः पाप से निपटने में असमर्थ था ताकि उपासक भगवान की उपस्थिति में प्रवेश कर सके। लेकिन अब लेखक आश्चर्य है कि यीशु मसीह के माध्यम से नई वाचा अब यही प्रदान करती है। और आप देख सकते हैं कि यह उनके तर्क में कैसे फिट बैठता है।

फिर, पाठक यहूदी धर्म में वापस क्यों जाना चाहेंगे, जब उनके पास कुछ ऐसा है जो अंततः पाप से निपटेगा, उन्हें पाप से शुद्ध करेगा, और उन्हें ईश्वर की उपस्थिति में प्रवेश करने की अनुमति देगा, कुछ ऐसा जो वे पुरानी वाचा के तहत नहीं कर सकते थे? वे उससे मुंह मोड़कर पुरानी वाचा की ओर वापस क्यों जाना चाहेंगे? फिर, लेखक को पुरानी वाचा से कोई समस्या नहीं है, एकमात्र बात यह है कि यह मसीह में पूरी हुई है। पुरानी वाचा ने जो इंगित किया था और जिसकी आशा की थी वह अब नई वाचा में मसीह के व्यक्तित्व में आ गया है, तो वे पीछे क्यों जाना चाहते हैं जबकि पुरानी वाचा ने जो इंगित किया था वह अब आ गया है? और इसलिए, लेखक उन्हें आश्चर्य करता है, फिर से, मैं इस वाक्यांश का बार-बार उपयोग करूंगा, यदि वे मसीह से मुंह मोड़ लेते हैं तो उनके पास खोने के लिए सब कुछ है, लेकिन अगर वे विश्वास के साथ उसे गले लगाएंगे तो उनके पास पाने के लिए सब कुछ है, चाहे कुछ भी हो यह उनकी लागत है। तो, पुरानी वाचा, फिर से, घटिया नहीं है, यह पुरानी नहीं है, यह बुरी नहीं है, यह पूर्णता नहीं ला सकती।

पूर्णता वह शब्द है जिसका उपयोग लेखक पूरे इब्रानियों में करता है, मूल रूप से इस तथ्य को संदर्भित करने के लिए कि नई वाचा अब आ गई है और अंततः यीशु मसीह के माध्यम से पाप से निपटा है, और अब हम पूजा में भगवान की उपस्थिति में प्रवेश कर सकते हैं, जो कोई भी इसके तहत नहीं कर सकता है पुरानी वाचा प्रणाली। वास्तव में, लेखक यह भी तर्क देने जा रहा है कि पुराने नियम का तम्बू और मंदिर भगवान की उपस्थिति को प्रतिबंधित करने के लिए उतना ही

काम करते हैं जितना कि उन्होंने लोगों के साथ भगवान की उपस्थिति लाने के लिए किया था। और हम उस पर थोड़ा और गौर करेंगे।

इस बारे में कोई प्रश्न है कि लेखक पुरानी वाचा को कैसे समझता है? फिर, हमें इसे मुख्य रूप से किसी बुरी या दोयम दर्जे की या घटिया या बेकार चीज के रूप में नहीं समझना चाहिए, जिसे अब अंततः किसी अच्छी चीज से बदल दिया जाए, बल्कि पुरानी वाचा के संदर्भ में देखने का मतलब किसी बड़ी चीज की ओर इशारा करना और उसकी आशा करना है। अब जब वह आ गया है, तो वे फिर से किसी और चीज़ पर क्यों जाना चाहते हैं? वे यीशु मसीह को क्यों अस्वीकार करना चाहेंगे और वापस जाकर उस चीज़ को अपनाना चाहेंगे जो यीशु मसीह और नई वाचा में कहीं अधिक बड़े पैमाने पर पूरी हुई है? अच्छा प्रश्न। ठीक है।

कोई और सवाल? यह अध्याय 3 से 12 तक के अधिकांश भाग के पीछे छिपा है, जो लेखक पुरानी वाचा के साथ करता है। बार-बार, वह ऐसी बातें कहेगा जो आपको यह सोचने पर मजबूर कर सकती हैं कि नई वाचा अच्छी नहीं है या पुरानी वाचा बेकार है, यह अच्छी नहीं है, यह बुरी है, यह दोषपूर्ण है और गहराई से त्रुटिपूर्ण है, लेकिन यह उसकी बात नहीं है। फिर से, मुझे लगता है कि नई वाचा के संबंध में पुरानी वाचा के बारे में लेखक का दृष्टिकोण, मेरे द्वारा पढ़े गए पहले दो छंदों में फिर से संक्षेप में प्रस्तुत किया गया है।

बहुत समय पहले, परमेश्वर ने भविष्यवक्ताओं के माध्यम से हमारे पूर्वजों से कई और विभिन्न तरीकों से बात की थी। वह पुराना नियम है। परन्तु इन अंतिम दिनों में, अर्थात् पूर्ति के समय में, उसने अपने पुत्र के द्वारा हमसे बात की है।

तो, नया नियम, फिर, इस नई वाचा के उद्धार में अपने पुत्र के माध्यम से बात करने वाला परमेश्वर वही पूर्णता है जिसकी ओर पुरानी वाचा और पुराना नियम इशारा कर रहा था और आशा कर रहा था। अब जब वह आ गया है, तो फिर से, वे उसे खोने और उसकी उपेक्षा करने के गंभीर खतरे में हैं, फिर से, चाहे यह परिवार के दबाव के कारण हो या शायद इसलिए कि पुरानी वाचा किसी भी कारण से अधिक मूर्त और दृश्यमान थी, लेखक नहीं चाहता कि वे इस न्यू को भूलने की गलती करें। आखिरकार भगवान बोले।

हां, भगवान ने अतीत में पुरानी वाचा के बारे में बात की थी, लेकिन अब भगवान ने अंततः उस पूर्ति के समय में बात की है जिसकी पुराने नियम को आशा थी। अब भगवान ने अपने पुत्र के माध्यम से बात की है, और वह अपने पाठकों को पाने की कोशिश कर रहे हैं, इसे न चूकें। जिन तरीकों से लेखक इस पर तर्क करता है, उनमें से एक, हम अभी भी पुरानी वाचा के बारे में बात कर रहे हैं, उन तरीकों में से एक है जिसमें लेखक इस बिंदु पर तर्क देता है, जिसे मैं ऐतिहासिक तर्क कहता हूं।

लेखक न केवल इस तथ्य से तर्क देता है कि मसीह पूर्णता है, बल्कि लेखक पीछे जाता है और पुराने नियम से ही तर्क देता है। और उनका तर्क कुछ इस तरह दिखता है। जब आप एक्सोडस और लेविटिकस की पुस्तकों पर वापस जाते हैं, और आप पुराने नियम के पुजारी के बारे में पढ़ते हैं, तो यहां हम पुराने नियम के पुजारी के बारे में थोड़ी बात करेंगे।

पुनः, पुजारी के रूप में यीशु, महायाजक के रूप में यीशु, इब्रानियों के लेखक द्वारा मसीह को चित्रित करने का प्रमुख तरीका है। लेकिन जब आप वापस जाते हैं और निर्गमन और लेव्यिकस में महायाजक के बारे में पढ़ते हैं, जो किस पंक्ति में होना था? दूसरे शब्दों में, आप एक सुबह उठकर यह निर्णय नहीं ले सकते कि मुझे लगता है कि मैं आज पुराने नियम में एक पुजारी बनूँगा। पुजारी बनने के लिए योग्यता क्या थी? हाँ, हारून का वंशज, या लेवी की जनजाति, आपको इससे संबंधित होना था अन्यथा कठिन भाग्य।

यदि आप लेवी की पंक्ति में नहीं थे तो यदि आप पुजारी बनना चाहते थे तो आपकी किस्मत खराब थी। अब, यहां बताया गया है कि इब्रानियों का लेखक कैसे काम करता है। वह कहते हैं, यदि यह अंतिम पुजारी होना था, दूसरे शब्दों में, यदि यह परम के लिए भगवान की योजना थी, यदि यह भगवान का परम पुजारी होना था, लेवी की पंक्ति में एक पुजारी, तो क्यों, ऐतिहासिक रूप से, वर्षों क्यों बाद में क्या आपके पास भजन 110 में किसी अन्य पुजारी के आने की आशंका है? क्या आपको वह पद याद है जो मैंने अभी भजन 10 से पढ़ा था? उसने कहा, यहोवा ने सदा के लिये शपथ खाई है, कि तू मेल्कीसेदेक की रीति पर याजक है।

वह वहां क्यों है? भजन 110, वर्षों बाद, किसी अन्य पुजारी के आने की आशा क्यों करता है, यदि पुराने नियम का पुजारी ही निर्गमन और लेव्यिकस में था? या दूसरा उदाहरण, लेखक आराम की बात करता है। याद रखें कि वह किस तरह से इज़राइल का वर्णन करता है, इज़राइल को याद रखें, उन्हें मिस्र से बाहर निकाला गया, जंगल के माध्यम से, वादा किए गए देश में लाया गया, और यहोशू के माध्यम से, यहोशू उन्हें वादा किए गए देश में ले आया। आपको प्रोफेसर विल्सन, हिल्डेब्रांट या फिलिप्स के साथ अपनी कक्षा याद है, जिसमें कनान देश पर विजय और प्रवेश के बारे में बात की गई थी।

लेखक ने इसे भूमि पर बसने वाले इस्राएलियों को उनके शत्रुओं से विश्राम दिलाने के रूप में संदर्भित किया है। अब, लेखक फिर से क्या करता है, वह कहता है, पुराने नियम में, आपको नए नियम में जाने की भी ज़रूरत नहीं है, पुराने नियम में, यदि यहोशू ने इस्राएलियों को अंतिम विश्राम दिया था, यदि वहाँ यही सब कुछ है था, क्यों, वर्षों बाद, क्या आपके पास भजन 95 विश्राम की पेशकश करता है? अभी भी आराम बाकी है। तो, फिर से, वह उन्हें यह दिखाने की कोशिश कर रहा है कि क्या यहोशू क्या इस्राएलियों के कनान देश में जाने पर यही सब कुछ था, और हाँ, यह एक पूर्ति थी, लेकिन यदि वहाँ पर बस इतना ही था, तो आपके पास अभी भी क्यों है 95 जैसा भजन यह अनुमान लगा रहा है कि अभी भी आराम उपलब्ध है? और अंत में, वाचा।

यदि, फिर से, ऐतिहासिक रूप से, जो वाचा परमेश्वर ने निर्गमन की पुस्तक में इस्राएल के साथ बनाई थी, जो उसने मूसा के माध्यम से इस्राएल के साथ बनाई थी, यदि वह वाचा अंतिम अंतिम वाचा थी, तो वर्षों बाद, यिर्मयाह 31 एक और वाचा की आशा क्यों करता है? क्या आप देख रहे हैं कि लेखक क्या कर रहा है? वह पुराने नियम से ही तर्क दे रहा है कि पुराना नियम पुरानी वाचा की अस्थायी प्रकृति की ओर भी इशारा करता है। यदि पाठक अपने पुराने नियम को ध्यान से पढ़ें, तो वे देखेंगे कि पुरोहिती और भूमि में बाकी लोग और वाचा, पुरानी वाचा, और पुरानी वाचा के साथ, तम्बू और मंदिर और बलिदान, वे यह देख पाएंगे कि यह सब अस्थायी था क्योंकि पुराना

नियम स्वयं भजन 110 और भजन 95 और यिर्मयाह अध्याय 31 जैसे ग्रंथों में किसी बड़ी बात की आशा करता है। फिर, आगे जाने के लिए, लेखक कहता है, पुराने नियम की अपेक्षा से भी बड़ी यह बात अब यीशु में पूरी हो गई है मसीह।

तो फिर, वे पुरानी वाचा में वापस क्यों जाना चाहते हैं? वे इस पर वापस क्यों लौटना चाहते हैं जबकि पुराना नियम स्वयं जिस ओर इशारा कर रहा था वह अब यीशु मसीह के व्यक्तित्व में आ चुका है? वैसे, मैं कुछ बातें कहना चाहता हूँ, खासकर पहले वाले पुजारी के बारे में। और मुझे टेड को आना चाहिए था और मृत सागर स्कॉल और उनके दृष्टिकोण के बारे में बात करनी चाहिए कि क्या दो मसीहा हैं, एक पुरोहित मसीहा, और एक राजा मसीहा। लेकिन, वैसे भी, मुद्दा यह है।

पुराने नियम से, हम जानते हैं कि मसीहा, राजा, किस वंश में आने वाला है? डेविड की पंक्ति में। लेकिन हमने अभी कहा कि पुजारी किस पंक्ति में आता है? लेवी की पंक्ति। तो, आपको एक समस्या है।

यदि आपके पास एक मसीहा है जिसे पुजारी भी बनना है, तो वह कैसे हो सकता है? क्योंकि वे पूरी तरह से अलग लाइनों से आते हैं। जाहिर तौर पर आपके पास यहूदा और लेवी के वंश से आने वाला कोई व्यक्ति एक ही समय में नहीं हो सकता है। तो, दिलचस्प बात यह है कि इब्रानियों का लेखक तब क्या करता है, हां, यीशु डेविड की वंशावली से है, लेकिन वह अपना समाधान भजन 110 में पाता है।

यीशु एक पुजारी हैं, लेकिन लेवी के वंश के अनुसार नहीं। तो क्या आपको भजन 110 याद है जो हमने अभी पढ़ा था? भजन 110. यहोवा ने मेरे प्रभु से कहा, मेरे दाहिने हाथ बैठ, जब तक मैं तेरे शत्रुओं को तेरे चरणों की चौकी न कर दूँ।

यह डेविड से किया गया वादा है। परन्तु यहोवा ने शपथ खाई है, और अपना मन न बदलेगा, तू अर्थात् यह मसीहा, मलिकिसिदक की रीति पर सदा के लिये याजक है। तो, जाहिरा तौर पर, पुजारियों का एक और क्रम है, और मैं मलिकिसिदक कौन है, इसके सभी विवरणों में नहीं जाना चाहता।

मेरे पास खुद से सवाल हैं। लेकिन लेखक मूल रूप से कह रहा है कि यीशु एक पुजारी है, लेकिन लेवी की पंक्ति में नहीं। वह एक अलग क्रम के अनुसार एक पुजारी है, मलिकिसिदक का क्रम।

इसलिए, यीशु दाऊद की पंक्ति में एक मसीहा हो सकता है, और फिर भी वह एक पुजारी हो सकता है। लेवी के वंश से आये बिना भी वह हमारा महायाजक हो सकता है। वह एक अलग लाइन से आता है।

वह पुजारियों के एक पूरी तरह से अलग क्रम से संबंधित है जिसके बारे में भजन 110 कहता है कि वह मलिकिसिदक का पुजारी है। यदि आप उत्पत्ति पर वापस जाते हैं, तो वहाँ आप मलिकिसिदक की कहानी पढ़ते हैं, और समस्या यह है कि यह हमें उसके बारे में, या दुनिया में वह कौन था और उसने क्या किया, इसके बारे में बहुत कुछ नहीं बताता है। इसमें उनके वंश, उनके माता-पिता कौन थे, या उनकी मृत्यु हुई या नहीं, के बारे में कुछ नहीं कहा गया है।

यह उसके बारे में कुछ नहीं कहता। लेकिन किसी तरह भजन इस पर ध्यान देता है और समझता है कि एक और पुरोहिती है, मलिकिसिदक के क्रम में पुजारियों का एक और क्रम है, और यीशु उसी से संबंधित है। तो इस प्रकार यीशु दाऊद के वंश में एक मसीहा हो सकता है, और वह लेवी के वंश में आए बिना भी एक पुजारी हो सकता है।

वह इस अन्य क्रम से संबंधित है जिसे इब्रानियों के लेखक ने पुराने नियम में मेल्कीसेदेक के इस क्रम में पाया है। और इसलिए इब्रानियों में एक प्रमुख विषय, आप पाएंगे कि मलिकिसिदक नाम इब्रानियों में कई बार आता है। जैसा कि लेखक तर्क देने जा रहा है, यीशु वास्तव में एक महायाजक हैं।

वह एक उच्च पुजारी की सभी योग्यताओं को पूरा करता है। भले ही वह लेवी की पंक्ति से नहीं आता है, वह मलिकिसिदक की पंक्ति में है। और इसलिए, वह मसीहा और राजा दोनों हो सकता है, लेकिन वह हमारा महायाजक भी हो सकता है।

दूसरी चीज़ जो आप देख रहे हैं वह इब्रानियों में है, जब लेखक बात करता है, जब वह उस पूजा की तुलना करना चाहता है जिसमें यहूदी ईसाई को शामिल होना चाहिए और उसका हिस्सा बनना चाहिए, यानी, वह बात करता है, और वह यीशु को संदर्भित करता है भौतिक मंदिर, या एक स्वर्गीय मंदिर, वह इसकी तुलना करता है, दिलचस्प बात यह है कि वह इसकी तुलना यरूशलेम के मंदिर से नहीं करता है, बल्कि वह इसकी तुलना पुराने नियम के तम्बू से करता है। इसलिए, दिलचस्प बात यह है कि, जब भी लेखक पवित्र स्थान और चढ़ाए गए बलिदानों, और पवित्रस्थान, और रोटी की मेज़, और वाचा के सन्दूक, उन सभी चीज़ों के बारे में बात करता है जो मंदिर में थीं, लेकिन जब इब्रानियों के लेखक का वर्णन है कि, वह पुराने नियम के तम्बू का उल्लेख करता है, मंदिर का नहीं। वह ऐसा क्यों करता है, इसका कारण कुछ लोगों ने सुझाव दिया है, ठीक है, यह इस बात का प्रमाण है कि मंदिर को नष्ट कर दिया गया था, इसलिए इब्रानियों को पहली शताब्दी में काफी देर से लिखा गया होगा, 70 ईस्वी के कुछ समय बाद, जब मंदिर को नष्ट कर दिया गया था।

हालाँकि, मुझे लगता है कि इसकी एक बेहतर व्याख्या है, और वह यह है कि बार-बार इब्रानियों का लेखक अपने पाठकों की तुलना उन इस्राएलियों से करने जा रहा है जो निर्गमन की पुस्तक के दौरान जंगल में भटकते थे। याद रखें, वे वही हैं जो जंगल में तब तक भटकते रहे जब तक कि वे उस वादा किए गए देश तक नहीं पहुँच गए जहाँ यहोशू अंततः उन्हें ले गया था। जब उन्होंने मिस्र छोड़ा और जंगल में यात्रा की, तो उन्होंने एक तम्बू स्थापित किया।

तम्बू एक पोर्टेबल मंदिर की तरह ही होता है। इसलिए, उन्होंने एक तम्बू स्थापित किया, और फिर जब आग का खंभा हिलता था, या बादल हटता था, तो वे भी चले जाते थे, और जहाँ भी वे समाप्त होते थे, वे इस तम्बू की स्थापना करते थे, और यहीं पर भगवान रहते थे, और वे इसे तोड़ देंगे, इसलिए यह एक तरह से पोर्टेबल था। लेखक हमेशा इसकी अपील करता है, और मुझे लगता है कि इसका कारण यह नहीं है कि मंदिर नष्ट हो गया था, बल्कि इसलिए क्योंकि लेखक अपने

पाठकों की तुलना पुराने नियम के लोगों से करना चाहता है जब वे जंगल में भटकते थे, और हम देखेंगे कि वह ऐसा क्यों करता है वह।

बुधवार को, हम इस बारे में अधिक बात करेंगे कि लेखक अपने पाठकों की तुलना इस्राएलियों से क्यों करता है क्योंकि वे मिस्र से जंगल के रास्ते कनान देश में भटक रहे थे।

यह न्यू टेस्टामेंट हिस्ट्री एंड लिटरेचर में डॉ. डेव मैथ्यूसन, इब्रानियों की पुस्तक पर व्याख्यान संख्या 27 है।